शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2013

सम्पादकीय

कत्ल, कानून और करुणा

परिवार से लेकर दुनियाभर में व्याप्त समस्याओं को हल करने के तीन तरीके हैं। एक तरीका है कत्ल, दूसरा है कानून और तीसरा है करुणा। ऐसा कोई भी युग नहीं रहा, जब समस्याएं नहीं रही हों, लेकिन इतिहास में वही युग दीप्तिमान हुआ है, जिसमें समस्याओं को मानवीय तरीके से हल किया गया हो। पारिवारिक और दुनिया में व्याप्त संघर्ष से मुक्ति के लिए कत्ल को आज भी एक साधन माना जाता है। आज समाज व्यवहार में तो शांत दिखाई देता है, परंतु समस्याओं के समाधान के लिए उसकी अंतिम निष्ठा कत्ल अथवा हिंसा पर टिकी हुई है। दुनियाभर की सरकारें आतंकवाद और हिंसा का मुकाबला कत्ल से करने के प्रयास में लगी हुई हैं, परंतु जैसे-जैसे हिंसक हथियारों का विकास होता गया, वैसे-वैसे यह पृथ्वी हिंसा से भरती चली गई। समाज में यह बहुत बड़ा भ्रम फैला रखा है कि हिंसा को हिंसा से ही मिटाया जा सकता है। इतिहास में ऐसे बहुत से आततायी हो गए हैं, जिन्होंने हिंसा के सहारे समाज और दुनिया में शांति स्थापना का प्रयास किया, परंतु वे उसमें असफल सिद्ध हुए। लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में कानून सर्वोपरि हो गया। दुनिया के जिन देशों में लोकतंत्र है, वहां कानून से शांति एवं सद्भाव कायम रखने के बहुतेरे प्रयास हो रहे हैं। यह अनुभव भी आ रहा है कि कितना ही अच्छा कानून बना दिया जाए, यदि उसके पालन करने और करवाने वालों में निष्ठा नहीं है तो वह अनुपयोगी और बेकार है। सरकार ने कानून बना दिया है इसलिए चोरी नहीं होती ऐसा नहीं है, बल्कि समाज ने इसे नैतिक मूल्य में सम्मिलित किया है। कत्ल और कानून से समस्याएं सुलझाते हैं, तो उसमें किसी को समाधान और किसी को असमाधान होता है और उसीमें से अशांति के बीज फिर से उठ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर स्वामी विवेकानंद ने 11 सितम्बर 1893 को अपने विश्वप्रसिद्ध शिकागो व्याख्यान में कहा था, "साम्प्रदायिकता, हठधर्मिता और उनकी वीभत्स वंशधर धर्मांधता इस सुंदर पृथ्वी पर बहुत समय तक राज्य कर चुकी है। यह पृथ्वी को हिंसा से भरती रही है, उसको बारम्बार मानवता के रक्त से नहलाती रही है, सभ्यताओं को विध्वस्त करती और पूरे-पूरे देशों को निराशा के गर्त में डालती रही है। यदि यह वीभत्स दानवी न होती, तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता। पर, अब इस सभा के सम्मान में जो घण्टाध्वनि हुई है, वह समस्त धर्मांधता का तलवार या लेखनी के द्वारा होने वाले सभी उत्पीड़नों का तथा एक ही लक्ष्य की ओर अग्रसर होने वाले मानवों की पारम्परिक कटुताओं का मृत्यु निनाद सिद्ध हो।" दूसरे व्याख्यान में उन्होंने कहा कि प्रत्येक को चाहिए कि वह दूसरों के सारभाग को आत्मसात् करके पुष्टिलाभ करे। सारे प्रतिरोधो के बावजूद प्रत्येक धर्म की पताका पर यह लिखा रहेगा -सहायता करो, लड़ा ेमत, परभाव ग्रहण न कि परभाव विनाष, समन्वय और शांति न कि मतभेद और कलह! इस व्याख्यान के मूल में करुणा भाव निहित है।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2013

दुनियाभर के संतों और ऋषि-मुनियों, पीर-पैगम्बरों ने अपनी करुणा से मनुष्य जाति को सद्मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। समाज में अनवरत रूप से प्रवाहित होने वाली करुणा से ही यह धरती टिकी हुई है। स्वामी विवेकानंद ने जहां अपनी बात समाप्त की थी, वहीं से संत विनोबा ने प्रारंभ किया। उनका जन्म 11 सितम्बर 1895 को हुआ। विनोबा ने स्वयं के लिए कहा था कि मेरा काम दिलों को जोड़ने का है।' उन्होंने पूरे भारत की पदयात्रा कर 32 लाख एकड़ जमीन दान में हासिल की। जिस जमीन के लिए इतिहास में महाभारत हुआ, उसका दान मांगना आधुनिक विज्ञान युग में अध्यात्म की ऊंची छलांग है। बिना करुणा भाव रखे यह संभव नहीं था। इसके अलावा विनोबा ने सभी धर्मों में समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से प्रमुख धर्मग्रंथों का गहराई से अध्ययन किया और सभी का सारभाग निकालकर मनुष्य समाज को समर्पित किया। इसके लिए उन्हें 'समन्वयाचार्य' की उपाधि मिली। महात्मा गांधी ने जहां पर अहिंसा का सूत्र छोड़ा था, उसे विनोबा जी ने वहां से पकड़कर आजाद भारत में सिद्ध कर दिखाया। जिस जमीन के लिए तेलंगाना में कत्लेआम हो रहा था, सरकार जिस प्रश्न को कानून से हल नहीं कर पा रही थी, उसे विनोबा ने अपनी कारुण्य शक्ति से हल करने का देशासूचन किया। दूसरी ओर 11 सितम्बर 2001 को दुनिया ने अमेरिका में हिंसा का ऐसा तांडव होते देखा, जिससे मनुष्यता सहम गई। एक शक्तिशाली देश पर वह सबसे बड़ा हमला था। विज्ञान के जमाने में राजनीति आउटआफ डेट हो गई है। स्वामी विवेकानंद के सपनों को साकार करने में, विनोबा के सर्वोदय विचार को अमली जामा पहनाने में महर्षि अरविंद के 'विश्वमानव' का विचार सहायक होगा। जिसका मंत्र होगा जयजगत और तंत्र होगा ग्रामस्वराज्य।

- डॉ. पुष्पेंद्र दुबे